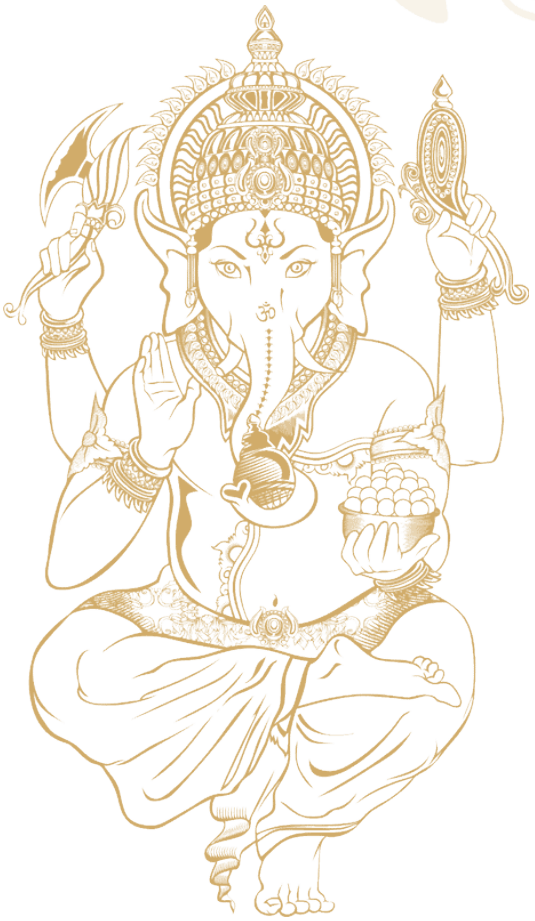

Sandeep Supriya

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120971502

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
1-02/10/1993	जन्म तिथि	29-30/03/1993
शुक्र-शनिवार	दिन	सोम-मंगलवार
घंटे 03:25:00	जन्म समय	05:20:00 घंटे
घटी 54:00:03	जन्म समय(घटी)	58:42:08 घटी
India	देश	India
Gorakhpur	स्थान	Chennai Beach
26:45:00 उत्तर	अक्षांश	13:05:00 उत्तर
83:23:00 पूर्व	रेखांश	80:18:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:03:32	स्थानिक संस्कार	-00:08:48 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:48:58	सूर्योदय	06:07:25
17:43:00	सूर्यास्त	18:20:02
23:46:26	चित्रपक्षीय अयनांश	23:46:02

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
बुध 3वर्ष 7मा 1दि	11:59:22	सिंह	लग्न	मीन	00:24:14	मंगल 2वर्ष 10मा 28दि
सूर्य	14:57:17	कन्या	सूर्य	मीन	15:31:47	गुरु
04/05/2024	27:11:10	मीन	चंद्र	मिथु	01:07:16	26/02/2014
04/05/2030	09:29:10	तुला	मंगल	मिथु	23:52:28	26/02/2030
सूर्य 21/08/2024	07:20:16	तुला	बुध	कुंभ	18:56:40	गुरु 15/04/2016
चन्द्र 20/02/2025	27:42:26	कन्या	गुरु व	कन्या	16:05:48	शनि 27/10/2018
मंगल 28/06/2025	18:50:10	सिंह	शुक्र व	मीन	19:39:25	बुध 01/02/2021
राहु 23/05/2026	00:25:53	कुंभ व	शनि	कुंभ	02:38:20	केतु 08/01/2022
गुरु 11/03/2027	10:35:08	वृश्चि व	राहु	वृश्चि	20:34:15	शुक्र 08/09/2024
शनि 21/02/2028	10:35:08	वृष व	केतु	वृष	20:34:15	सूर्य 27/06/2025
बुध 27/12/2028	24:27:44	धनु	हर्ष	धनु	28:06:29	चन्द्र 27/10/2026
केतु 04/05/2029	24:36:11	धनु	नेप	धनु	27:13:39	मंगल 03/10/2027
शुक्र 04/05/2030	29:55:30	तुला	प्लूटो व	वृश्चि	01:28:49	राहु 26/02/2030

लग्न-चलित

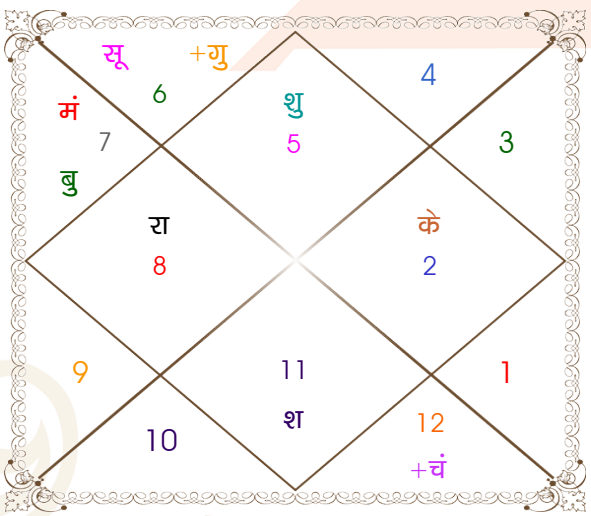

लग्न-चलित

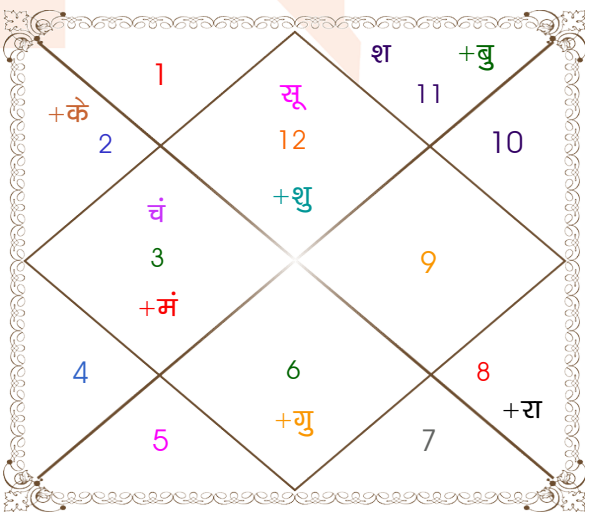

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	गज	सर्प	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	बुध	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मीन	मिथुन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.00		

वर दकममच का वर्ग सिंह है तथा कन्या नचतपलं का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार वर दकममच और कन्या नचतपलं का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

वर दकममच मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

कन्या नचतपलं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र कन्या नचतपलं कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु वर दकममच कि कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल ैदकममच कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

ैदकममच तथा ौनचतपलं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।